क. आदि में परमेश्वर ने

- सृष्टि के दो वृत्तांत दो अलग-अलग तरीकों से परमेश्वर का परिचय कराते हैं::
  - उत्पत्ति 1:1-2:3 एक शक्तिशाली परमेश्वर का परिचय कराता है। वह केवल अपने वचन से सृष्टि कर सकता है। उसकी महान शक्ति हमें उसकी स्तुति करने और उसकी आराधना करने के लिए प्रेरित करती है (भजन संहिता 95:3-6)
  - उत्पत्ति 2:4-25 एक करीबी परमेश्वर का परिचय कराता है। उसने हमारे लिए एक घर तैयार किया और हमें अपने हाथों से ढाला। वह हमारी खुशियों की परवाह करता है और हमें जीना सिखाता है
- आज हम पाप के कारण परमेश्वर की उपस्थिति से अलग हो गए हैं। हालाँकि, हम अभी भी उसकी शक्ति और निकटता की सराहना कर सकते हैं। हम अपने जीवन में परमेश्वर की अद्भुत और प्यारी उपस्थिति का आनंद ले सकते हैं।

ख. परमेश्वर का कार्य:

- **सिद्ध सृष्टि**
  - अभिव्यक्ति "अच्छा" [इब्रानी में टोव] का उपयोग यह समझाने के लिए किया जाता है कि सृष्टि का काम अच्छा हुआ; कि वह उत्तम और सुन्दर थी, और उसमें कुछ भी बुराई नहीं थी। बेशक कोई मौत नहीं थी। मृत्यु सृष्टि प्रक्रिया का हिस्सा नहीं थी।
  - हजारों या लाखों वर्षों के दौरान की प्रक्रिया सृष्टि के अनुकूल नहीं है। पेड़ फल देते हैं (उत्पत्ति 1:12; 2:9)। पक्षी उड़ते हैं, जानवर चलते हैं (उत्पत्ति 1:20, 25)। आदम को एक वयस्क व्यक्ति के रूप में बनाया गया था जो बोल और सोच सकता था (उत्पत्ति 2:19)।
  - जब सृष्टि का अंत हुआ, "आकाश और पृथ्वी और उनकी सारी सेना का बनाना समाप्त हो गया।" (उत्पत्ति 2:1)। यह सिर्फ छह शाब्दिक दिन थे।

- **सिद्ध समय**
  - उजियाला[1], समुद्र[2], पृथ्वी[3], वनस्पति[4], तारे[5], मछली[6], पक्षी[7], पशु[8], मनुष्य[9]. छह दिनों में सब कुछ किया गया था। लेकिन कुछ महत्वपूर्ण लापता था, दसवाँ तत्व जो इस प्रक्रिया को समाप्त करेगा: सातवाँ दिन[10].
  - विश्राम, ध्यान, मानव संगति, और सृष्टिकर्ता के साथ सहभागिता का समय। उन सिद्ध मनुष्यों को इस विशेष समय की आवश्यकता थी, यहाँ तक कि हजारों वर्षों के पाप के बाद भी हमें इसकी और अधिक आवश्यकता है (निर्गमन 20:8-11)।
  - सब्त हमें छुटकारे के माध्यम से हमारे मूल, और हमारे गौरवशाली भविष्य की याद दिलाता है (व्यवस्थाविवरण 5:15; यशायाह 66:23)।

- **सिद्ध मानव जाति**
  - परमेश्वर की छवि में यह शामिल हैं:
    (1) एक आध्यात्मिक स्वभाव जो हमें परमेश्वर से संवाद करने में सक्षम बनाता है
    (2) हमारे सृष्टिकर्ता के साथ एक भौतिक समानता
    (3) सोचने और नैतिक निर्णय लेने की क्षमता
  - उत्पत्ति 2:7 के अनुसार, जब श्वास (आत्मा) मिट्टी की आकृति में डाली गई, जिसे परमेश्वर ने ढाला था (देह), एक जीवित (प्राणी) बन गया था।
  - तब परमेश्वर ने दूसरा रचनात्मक कदम उठाया (उत्पत्ति 2:21-22), इस प्रकार सिद्ध "मनुष्य" को पूरा किया: नर और नारी, पुरुष और स्त्री।

ग. परमेश्वर से उपहार

- जब परमेश्वर ने पहले मनुष्य को बनाया, तो उसने उसे तीन उपहार दिए, जिसमें तीन जिम्मेदारियाँ शामिल थीं:
  - अदन की वाटिका (उत्पत्ति 2:8): यह एकदम सिद्ध घर था। उसे इसकी देखभाल करनी थी और इसमें खेती करनी थी। परमेश्वर ने हमें जो दिया है, उसे हमें संरक्षित करना चाहिए
  - भोजन (उत्पत्ति 2:16): परमेश्वर ने उसे उसकी सिद्ध देह के लिए उपयुक्त भोजन दिया। उसने एक प्रतिबंध जोड़ा ताकि वह उसके प्रति जिसने उसे सब कुछ दिया था अपनी वफादारी साबित कर सके (उत्पत्ति 2:17)
  - स्त्री (उत्पत्ति 2:22): एकदम सिद्ध उपहार। कोई जिसे से वह प्रेम कर सके। कोई जिसके साथ वह सब कुछ साझा कर सके। किसी के साथ "एक तन हो सके" (उत्पत्ति 2:24)